International Journal of Social Science Research (IJSSR)
Volume- 2, Issue- 3 | May - June 2025 ISSN: 3048-9490

ब्रेस्ट टैक्स: एक सत्य घटना या ऐतिहासिक षड्यंत्र

विपुल तिवारी
शोधार्थी प्राचीन भारतीय इतिहास एवं पुरातत्व विभाग
लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ, उत्तर प्रदेश

सारांश

"ब्रेस्ट टैक्स" या "मुलाक्करम" केरल के त्रावणकोर राज्य में कथित रूप से निचली जातियों की महिलाओं पर लगाया गया एक ऐसा कर बताया जाता है, जो स्तनों को ढकने की अनुमति के बदले वसूला जाता था। यह लेख इस धारणा की ऐतिहासिक प्रामाणिकता की जाँच करते हुए सामाजिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक परिप्रेक्ष्य को समझने का प्रयास करता है। ऐतिहासिक दस्तावेज़ों, यात्री वृत्तांतों और समाजशास्त्रीय अध्ययनों के आधार पर यह स्पष्ट होता है कि यद्यपि जाति-आधारित कर व्यवस्था वास्तव में अस्तित्व में थी, किन्तु "मुलाक्करम" को केवल स्तन ढकने से जोड़ना तथ्यात्मक रूप से अस्थिर है। "नांगेली" की कथा एक प्रेरणादायक लोकगाथा के रूप में उभरती है, जिसका ऐतिहासिक प्रमाण सीमित है, लेकिन यह सामाजिक अन्याय के विरुद्ध प्रतिरोध का शक्तिशाली प्रतीक बन चुकी है। लेख यह तर्क प्रस्तुत करता है कि "ब्रेस्ट टैक्स" एक ऐतिहासिक घटना से अधिक एक सामाजिक विमर्श है, जो स्त्री-शोषण, जातिवाद और सांस्कृतिक पहचान से जुड़ा है। यह अध्ययन इतिहास और मिथक के बीच की रेखा को स्पष्ट करता है और तथ्यों के साथ भावनाओं के संतुलन की आवश्यकता को रेखांकित करता है।

मूल शब्द: ब्रेस्ट टैक्स, मुलाक्करम, जाति आधारित भेदभाव, नांगेली, त्रावणकोर सामाजिक व्यवस्था

परिचय

इतिहास केवल तिथियों और घटनाओं का संग्रह नहीं होता, बल्कि वह सामाजिक संरचनाओं, मान्यताओं और संघर्षों का भी दर्पण होता है। भारत के सामाजिक इतिहास में जाति व्यवस्था और लिंग आधारित भेदभाव लंबे समय तक शोषण और उत्पीड़न के आधार रहे हैं। “ब्रेस्ट टैक्स” या “मुलाक्करम” इसी इतिहास का एक विवादास्पद और प्रतीकात्मक अध्याय है। ऐसा कहा जाता है कि त्रावणकोर रियासत (वर्तमान केरल) में निचली जातियों की महिलाओं से यह कर तब लिया जाता था जब वे अपने स्तनों को ढकना चाहती थीं। यह कर व्यवस्था सामाजिक नियंत्रण और ऊँची जातियों की श्रेष्ठता बनाए रखने का एक माध्यम मानी जाती है। “नांगेली” नामक महिला की लोककथा ने इस कर के विरोध का एक शक्तिशाली प्रतीक प्रस्तुत किया है, जिसने आधुनिक सामाजिक विमर्श में गहरी छाप छोड़ी है।

हालांकि, ऐतिहासिक साक्ष्य इस कथा को पूरी तरह प्रमाणित नहीं करते। ऐसे में यह जरूरी हो जाता है कि “ब्रेस्ट टैक्स” को इतिहास और मिथक के बीच खड़े एक सामाजिक विमर्श के रूप में देखा जाए, और उसके पीछे की सामाजिक, राजनीतिक तथा सांस्कृतिक परतों की निष्पक्षता से जांच की जाए। यही इस अध्ययन का उद्देश्य है तथ्यों और प्रतीकों के बीच की रेखा को समझना और यह विश्लेषण करना कि क्या “ब्रेस्ट टैक्स” एक ऐतिहासिक वास्तविकता थी या एक प्रेरणात्मक किंवदंती।

त्रावणकोर राज्य और सामाजिक पृष्ठभूमि

त्रावणकोर राज्य दक्षिण भारत के उन राज्यों में से एक था जहाँ जाति-आधारित भेदभाव अत्यधिक था। उच्च जातियों विशेषकर नंबूदिरी ब्राह्मणों और नायरों को सामाजिक विशेषाधिकार प्राप्त थे, जबकि एझावा, पुलाया, परयार जैसी

जातियाँ निचले दर्जे की मानी जाती थीं।इन जातियों की महिलाओं को न केवल ऊपरी वस्त्र पहनने से रोका जाता था, बल्कि उन्हें सार्वजनिक स्थानों पर निचले स्तर के कपड़े पहनने के लिए बाध्य किया जाता था। इसका उद्देश्य तथाकथित ऊँची जातियों की श्रेष्ठता को बनाए रखना था। कुछ प्रथाएँ जैसे "मारायाद" (निचली जातियों को ऊँची जातियों के सामने झुककर चलना) और "अवर्ण शुद्धि" (निचली जाति के स्पर्श से ऊँच जाति को अपवित्र माना जाना) इन्हीं के उदाहरण हैं।

दरअसल १९वीं शताब्दी तक केरल में ऊपर का तन ढंकने की परम्परा रही ही नहीं है चाहे पुरुष हों या महिला, राजा हो या रंक, सवर्ण हो या दलित. उमस भरे मौसम के कारण वहाँ के लोग सिर्फ कमर के नीचे ही कपड़े पहनते 17वीं, शताब्दी में भारत आए एक डच यात्री विलियम वैन निउहोफ ने त्रावणकोर की तत्कालीन रानी अश्वती थिरुनल उमयम्मा की पोशाक के बारे में बात करते हुए लिखा है, "मुझे महारानी के सामने पेश किया गया था। उनके पास 700 से अधिक नायर सैनिकों का पहरा था, जो मालाबार शैली के कपड़े पहने हुए थे। रानी की पोशाक उसके बीच में लिपटे कॉलिको के एक टुकड़े से ज्यादा कुछ नहीं है। उसके शरीर का ऊपरी हिस्सा नग्न दिखाई देता है।" त्रावणकोर की रानी से हुई मुलाकात को लेकर विलियम वैन ने एक चित्र भी बनाया था। इस चित्र में यह स्पष्ट देखा जा सकता है कि रानी और उनके साथ मौजूद लोगों ने अपने सीने को या तो कपड़े से नहीं ढँका है या फिर काफी छोटा कपड़ा डाला हुआ है।

17वीं और 18वीं शताब्दी के यात्री पिएत्रो डेला वैले और जॉन हैरी ग्रोस के अनुसार, केरल में पुरुष और महिला दोनों ही ऊपरी कपड़े नहीं पहनते थे। इसके अलावा, मानवविज्ञानी फ्रेड फावसेट ने उल्लेख किया है कि मालाबार में रहने वाला कोई भी स्थानीय निवासी ब्लाउज पहनने या अपने स्तनों को ढँकने का शौक नहीं रखता। शुरुआत में जब अंग्रेज नर्सों ने स्थानीय महिलाओं को अपने स्तन ढकने के लिए कहा तब उन महिलाओं द्वारा उन्हें जमकर फटकार लगाई गई थी। क्योंकि उस समय तक मालाबार में सिर्फ वेश्याएँ ही आकर्षक दिखने के लिए स्तन ढकती थीं।

मुलाक्करम: ऐतिहासिक दस्तावेजों में प्रमाण

ब्रेस्ट टैक्स को लेकर सबसे पहले अंग्रेज़ी लेखकों और पर्यटकों ने उल्लेख किया था। मिशनरियों और ब्रिटिश प्रशासकों द्वारा लिखे गए पत्रों और रिपोर्ट्स में "मुलाक्करम" का उल्लेख मिलता है, लेकिन यह स्पष्ट नहीं होता कि यह कर वास्तव में स्तनों को ढकने से जुड़ा था या केवल एक सामान्य जाति-आधारित कर था।

कुछ प्रमुख बिंदु:

1.कई कर प्रकार – उस समय महिलाओं और पुरुषों पर कई जाति आधारित कर लगाए जाते थे:

- तालक्करम: पुरुषों से लिया जाने वाला सिर कर
- मुलाक्करम: महिलाओं से लिया जाने वाला स्तन कर

2. इतिहासकार मनोरमा शर्मा और राजू नारायणन के अनुसार, मुलाक्करम एक कर प्रणाली थी जो त्रावणकोर की कर व्यवस्था का हिस्सा थी, और यह जाति पर आधारित था, न कि कपड़े पहनने की इच्छा पर।

3. हालांकि यह कर स्त्रियों से लिया जाता था, लेकिन कोई स्पष्ट प्रमाण नहीं है कि यह विशेष रूप से स्तन ढकने से संबंधित था। इसका उद्देश्य सामाजिक श्रेणियों को आर्थिक रूप से नियंत्रित करना था।

नांगेली की कथा: लोकगाथा या सत्य?

ब्रेस्ट टैक्स की चर्चा आते ही एक नाम विशेष रूप से सामने आता है – नांगेली। यह एक महिला थी, जो एझावा जाति से थी, और कहा जाता है कि उसने इस कर के विरोध में अपने स्तन काटकर राजा के सामने रख दिए थे। बाद में वह अत्यधिक रक्तस्राव से मर गई। इस घटना ने लोगों को झकझोर दिया और त्रावणकोर की सरकार ने यह कर प्रणाली समाप्त कर दी – ऐसा लोककथाओं में कहा जाता है। हालांकि यह कथा अत्यंत भावनात्मक है और जनआंदोलन का प्रतीक बन चुकी है, लेकिन इतिहासकारों द्वारा इसे ऐतिहासिक रूप से सिद्ध नहीं किया गया है। नांगेली के जीवन, उसके गाँव या उस कालखंड की कोई प्रमाणिक सरकारी दस्तावेज़ उपलब्ध नहीं हैं। इतिहासकार मनोज एन. और लेखक मुरली थुम्मारुकुडी जैसे विद्वान इस कथा को 19वीं सदी के बाद की रचना मानते हैं, जो शायद आधुनिक सामाजिक आंदोलनों को प्रेरित करने हेतु गढ़ी गई हो। यह कहानी साल 2012 में मुरली टी द्वारा इस पर पेंटिंग्स बनाने के बाद तेजी से चर्चा में आई और इसे एसबीडी कवियूर बुलेटिन, वागाबॉन्ड, बीबीसी और 'टाइम्स ऑफ इंडिया' समेत कई अन्य मीडिया संस्थानों ने उक्त कहानी को सच मानते हुए 'फैलाने' की कोशिश की।

ब्रेस्ट टैक्स और औपनिवेशिक दृष्टिकोण

ब्रिटिश मिशनरियों और प्रशासकों ने त्रावणकोर की इन अमानवीय प्रथाओं की आलोचना की। उन्होंने इसे ईसाई धर्म के प्रचार और मानवीय मूल्यों की श्रेष्ठता दिखाने के लिए इस्तेमाल किया। इस कारण कई स्थानीय प्रथाएँ या तो विकृत तरीके से दर्ज की गईं या फिर अंग्रेजों द्वारा प्रचारित की गईं। ब्रिटिश मिशनरी रिवरेंड सैमुअल मेटकॉफ और अन्य अधिकारियों ने लिखा कि निचली जातियों की महिलाओं को कपड़े पहनने की अनुमति नहीं थी, और कर देना पड़ता था, पर ये दस्तावेज़ बिना किसी स्थानीय अभिलेख या कानूनी आदेश के हैं, जिससे इनकी प्रमाणिकता संदिग्ध होती है।

लेखक और इतिहासकार मनु पिल्लई केरल में निचली जातियों को अपने स्तनों को ढकने से रोकने की धारणा को दृढ़ता से खारिज करते हुए कहते हैं, "नाम के अलावा इसका स्तनों से कोई लेना-देना नहीं था। यह सिर्फ़ लिंगों के बीच अंतर करने के लिए था। इसे स्तनों को ढकने के अधिकार के लिए कर के रूप में गलत समझा गया है – ऐसा कोई कर नहीं था।

ब्रेस्ट टैक्स और सामाजिक सुधार आंदोलन

19वीं शताब्दी में जब केरल में ईसाई मिशनरियाँ, ब्राह्मणेतर आंदोलन, और नारायण गुरु जैसे समाज सुधारकों का प्रभाव बढ़ा, तब दलितों और महिलाओं के अधिकारों की मांग उठने लगी। ऊपरिवस्त्र आंदोलन इन्हीं आंदोलनों में से एक था, जहाँ दलित महिलाओं ने ऊपरी वस्त्र पहनने का अधिकार माँगा। इस संघर्ष ने अंततः त्रावणकोर सरकार को बाध्य किया कि वह 1859 में एक आदेश निकाले जिसमें महिलाओं को अपनी इच्छानुसार वस्त्र पहनने की अनुमति दी गई।

इतिहास और मिथक के बीच की रेखा

ब्रेस्ट टैक्स को लेकर जो आज की आम धारणा है एक अमानवीय कर जो स्तन ढकने पर लगाया जाता था वह पूरी तरह प्रमाणित नहीं है। हाँ, यह सच है कि जाति-आधारित कर प्रणाली त्रावणकोर में प्रचलित थी। निचली जातियों की महिलाओं को ऊपरी वस्त्र पहनने की अनुमति नहीं थी। यह सब एक सामाजिक उत्पीड़न का हिस्सा था। लेकिन, यह कहना कि "ब्रेस्ट टैक्स = स्तन ढकने का कर" यह निष्कर्ष ऐतिहासिक प्रमाणों के आधार पर अस्थिर है।

आधुनिक व्याख्या और पॉपुलर कल्चर

आज के समय में नांगेली की कथा और ब्रेस्ट टैक्स इंटरनेट, सोशल मीडिया और फिल्मों में व्यापक रूप से फैली हुई है। कई कलाकारों, लेखकों और फिल्मकारों ने इस विषय पर कार्य किया है। हालांकि यह लोककथा है, फिर भी यह सामाजिक अन्याय के प्रतीक के रूप में उभरी है। इसका एक पहलू यह भी है कि आधुनिक समाज में लोग इसे एक स्त्रीवादी आंदोलन, दलित जागरूकता और वर्ग संघर्ष के प्रतीक के रूप में देखते हैं। इस तरह ब्रेस्ट टैक्स एक ऐतिहासिक घटना से ज्यादा एक सांस्कृतिक विमर्श बन गया है।

निष्कर्ष

"ब्रेस्ट टैक्स" या "मुलाक्करम" को लेकर जो कहानी प्रचलित है, वह पूरी तरह से ऐतिहासिक रूप से प्रमाणित नहीं है, लेकिन इसके पीछे की सामाजिक सच्चाई – जाति और लिंग आधारित भेदभाव – निर्विवाद है। यह कहना उचित होगा कि ब्रेस्ट टैक्स आंशिक रूप से सत्य है एक जाति आधारित कर था, लेकिन स्तन ढकने के साथ इसका सीधा संबंध सिद्ध नहीं है। "नांगेली" एक प्रेरणात्मक किंवदंती है ऐतिहासिक प्रमाणों के बिना, लेकिन सामाजिक विमर्श में प्रभावशाली। त्रावणकोर की सामाजिक व्यवस्था उत्पीड़क थी और वहां स्त्रियों के खिलाफ अत्याचार व्यापक थे। इस प्रकार, इतिहास और लोककथाओं के बीच एक महीन रेखा है, और जरूरी है कि हम तथ्यों और भावनाओं के संतुलन को समझें। 'ब्रेस्ट टैक्स' पूरी तरह मिथक नहीं है, इसके पीछे एक ऐतिहासिक और सामाजिक सच्चाई मौजूद है।

सन्दर्भ सूची

1. मेनन, ए. एस. (2007). *केरल का एक ऐतिहासिक सर्वेक्षण.* कोट्टायम: डी.सी. बुक्स।
2. हार्डग्रेव, आर. एल. (1969). *तमिलनाड के नादार: एक समुदाय की राजनीतिक संस्कृति में परिवर्तन.* कैलिफ़ोर्निया विश्वविद्यालय प्रेस।
3. बेली, एस. (1999). *भारत में जाति, समाज और राजनीति: अठारहवीं सदी से आधुनिक युग तक.* कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय प्रेस।
4. फुलर, सी. जे. (1976). *आज के नायर.* कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय प्रेस।
5. देविका, जे. (2003). "केरल में महिलाओं की क्षमताएँ: लैंगिक असमानता और सामाजिक परिवर्तन". *भारतीय समाजशास्त्र में योगदान*, 37(1-2), 123-149।
6. नायर, के. आर. (1993). *विकास के सामाजिक परिणाम: केरल का अनुभव.* नई दिल्ली: मित्तल पब्लिकेशन्स।
7. दलरिंपल, डब्ल्यू. (1998). *काली का युग.* पेंगुइन बुक्स।
8. थर्स्टन, ई. (1909). *दक्षिण भारत की जातियाँ और जनजातियाँ* (खंड 1-7). मद्रास: सरकारी प्रेस।
9. अय्यर, एल. के. अनंत कृष्ण (1909). *कोचीन की जनजातियाँ और जातियाँ.* कोचीन सरकार प्रेस।

त्रावणकोर की महारानी से मिलते हुए जोहान नीहॉफ। (स्रोत: Here)

A NAMBUTHIRI LADY AND A BRIDE

एल. के. अनंत कृष्ण अय्यर द्वारा लिखित 'द कोचीन ट्राइब्स एंड कास्ट्स' से नम्बुथिरी ब्राह्मण महिलाएँ

मंदिर के जुलूस में नायर लड़कियाँ और पुरुष, एल. के. अनंत कृष्ण अय्यर की किताब से